'पद्मावत' में अभिव्यक्त लोकजीवन

इशरत बी. खान

जायसी की गणना उन प्रतिभाशाली कवियों में की जाती है जिनका उद्देश्य काव्यकला का प्रदर्शन करना नहीं था बल्कि वे तो जनता के बीच रहकर सांस्कृतिक समन्वय का सन्देश जनता तक पहुँचाना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने लोक-कथाओं का आश्रय लिया। इसी कारण जायसी की सभी रचनाओं में लोकजीवन का अच्छा चित्रण मिलता है। 'पद्मावत और चित्ररेखा' की प्रत्येक पंक्ति से यह प्रकट होता है कि जायसी का भारतभूमि और भारतीय जनमानस से कितना घनिष्ठ सम्बन्ध था। उन्होंने पदमावत की कथावस्तु का चयन, अवध प्रान्त में प्रचलित लोककथा से किया है। इस कथा की घटनाएँ उच्चवर्ग से समबन्धित हैं, पर जायसी ने इनका ऐसा चित्रण किया है कि उसमें जनजीवन एवं जनसंस्कृति का समावेश भी हो गया है। उनकी तीखी दृष्टि से जनसंस्कृति की सामान्य से सामान्य बातें भी ओझल नहीं होने पायी हैं। उन्होंने लोककृत्यों, उत्सवों, प्रथाओं, विश्वासों, पारिवारिक सम्बन्धों, संगीत, व्यवसाय, मूर्ति और स्थापत्य कला, काव्य रूढ़ियों, लोकाचारों, विविध पूजा विधानों आदि लोकजीवन के विभिन्न पक्षों का बारीकी से चित्रण किया है।

'लोककृत्य' के अन्तर्गत संस्कार एवं भोज का विस्तार से वर्णन किया गया है। संस्कार से अभिप्राय उन मांगलिक कृत्यों से हैं जो मानव जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए किए जाते हैं। सामान्यतः इन संस्कारों की संख्या सोलह मानी जाती है।[1] इन संस्कारों का हमारे जीवन में विशेष महत्त्व है क्योंकि इनसे हमारा जीवन सही मार्ग पर अग्रसारित होता है। वास्तव में यह संस्कार हमारी संस्कृति की भारतीय मुहर है जो बार-बार लगाई जाती है जिससे हम हज़ारों के बीव में भी आसानी से पहचाने जा सकें। पद्मावतकार ने जन्म, छठी पूजन, नामकरण तथा विवाह संस्कारों के वर्णन में विशेष रूचि दिखाई है।

पद्मावती के जन्म के पूर्व वैसे ही शुभ लक्षण प्रकट हुए थे जैसे कि महापुरूषों, अवतारों के जन्म लेने के पूर्व प्रकट होते हैं। इस सन्दर्भ में एक उदाहरण द्रष्टव्य है....

चम्पावती जो रूप सँवारी। पद्मावती चाहै औतारी [2]

'छठी पूजन' हिन्दुओं के सोलह संस्कारों में नहीं है। इसे 'स्फुट संस्कार' कहा जा सकता है। 'पद्मावत' की नायिका 'पद्मावती' की छठी धूमधाम से मनाई गई है....

• प्रोफेसर, अध्यक्ष हिन्दी विभाग, गोवा विश्वविद्यालय, गोवा

भै छठी राति छठि सुख मानी, रहस कूद सौ रैनि बिहानी।[3]

सोलह संस्कारों में 'नामकरण' संस्कार महत्त्वपूर्ण है इसे जायसी कैसे भूलते.... जायसी, नायिका का नामकरण, परम्परानूसार पंडितों से यों करवाते हैं....

भा बिहान पंडित सब आए, काढ़ि पुरान जनम अरथाए।।
कन्या रासि उदय जगकीया, पद्मावती नाम असदीया।।

नामकरण के साथ ही जन्मपत्री भी बनती है जो भावी जीवन की घटनाओं का बोध कराने में सहायक होती है। पद्मावती की जन्मपत्री भी पंडितों ने इस प्रकार बनाई.....

कहेन्हि जन्मपत्री जो लिखी, देइ असीस बहुरे ज्योतिषी।[4]

सभी सूफी कवियों ने अपने काव्य में विवाह संस्कार का विस्तार से वर्णन किया है। इसका मुख्य कारण यह है कि इस्लाम में विवाह-कर्म आवश्यक माना गया है। अत: जायसी के पद्मावत में विवाह-वर्णन का विस्तार होना स्वाभाविक है।

जायसी का विवाह वर्णन, हिन्दू समाज का लोक सम्मत विवाह वर्णन है। उन्होंने हिन्दू शास्त्रों के अनुरूप विवाह-वर्णन नहीं लिखा है वरन् सामान्य हिन्दू जीवन में जिस प्रकार यह कृत्य सम्पन्न होता है उसे देखकर ही यह वर्णन लिखा है। पद्मावत में बरीक्षा, तिलक, ग्रन्थिबन्धन, मण्डप, बन्दनवार, सप्तपदी के अनेक रोचक विवरण आये हैं।

विवाह की लोकरीतियों में 'बरक्षा' का प्रमुख स्थान है। इसमें कन्या पक्ष वाला, वर पक्ष वाले से विवाह की बातचीत पक्की करके कुछ 'पत्रं पुष्पं' ठहरौनी स्वरूप देता है। यह सर्वप्रथम वैवाहिक कार्य है। इसीलिए सबसे पहले पद्मावती के पिता ने 'बरक्षा' दिया और रत्नसेन को टीका काढ़ा..... जिसको प्रस्तुत उदाहरण में दर्शाया गया है....

भा बरोक तब तिलक सँवारा, औ बरोक भा, टीका काढ़ा।[5]

जिस समय घर पर बरात आती है, पदमावती के संग उसकी सभी सखियाँ बरात देखने जाती हैं। उस समय की सुन्दर छवि जायसी ने प्रस्तुत की है....

अंग अंग सब हुलसे, कोइ कतूहँ न समाई।
ठावहिं ठाँव बिमोही, गई मुरझा तनु आइ।।
हुलसे नैन दरस मदमाते, हुलसे रंगरस राते।।[6]

जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि जायसी द्वारा किया गया यह विवाह वर्णन लोक इष्ट है। शास्त्रानुमोदित वह इसलिए है कि हिन्दू धर्म में जायसी के समय जो विवाह पद्धति प्रचलित थी और आज है, वह शास्त्रीय विधानों पर ही आधारित है। इसके बिना वैवाहिक विधान पूर्ण नहीं हो सकता है। उदाहरण के तौर पर शास्त्रानुमोदित विवाह में सप्तपदी का महत्वपूर्ण स्थान है अर्थात् जब तक वर और वधू पाणिग्रहण के पश्चात गांठ जोड़कर सात भावरें नहीं ले लेते तब तक विवाह पूर्णरूप से सम्पन्न नहीं माना जाता। जायसी ने अपने काव्य में इस शास्त्रीय विवाह पद्धति का विशेष रूप से वर्णन किया है.....

ISSN No. : 2347–9612

गाँठि दुलह दुलहिन कै जोरी। दुऔ जगत जो जाइ न छोरी।।
वेद पढ़ैं पंडित तेहि ठाऊँ। कन्या तुला राशि लेई नाऊँ।।[7]

एक अन्य उदाहरण इस प्रकार है.....

कन्त लीन्ह दीन्हा धनि हाथा। जोरी गाँठि दुऔ एक साथ।।
चाँद सुराज सत भाँवरि लेहीं। नखत मोति नेव छावरी देही।।[8]

लोकजीवन ने भी इस शास्त्रीय प्रथा को अपने वैवाहिक कार्य का महत्वपूर्ण अंक बना लिया है। सात भांवरों के पश्चात ही कन्या पराई हो जाती है। 'सप्तपदी' प्रथा के इस लोक सम्मत रूप को प्रस्तुत लोकगीत में देखा जा सकता है.....

पहिली भँवरिया के घुमतै हो बाबा
अबहीं हम बेटी तोहार।
दुसरी भँवरिया के घुमतै हो अम्मा
अबहीं हम धेरिया तोहार।
तीसरी भँवरिया के घुमते हो भैया
अबहीं हम बहिनी तोहार।
चौथी भँवरिया के घुमते हो भौजी
अबहीं ननदिया तोहार
सतईं भँवरिया के घुमतै हो बाबा
भइलिउँ मैं तिरिया पराई।

विवाह के पश्चात दूसरे लोककृत्य भोज का वर्णन आता है। लोकजीवन में प्रीति-भोजों का भी महत्त्व रहा है। 'पद्मावत' में प्रीति भोज प्रसंग, 'रत्नसेन और पद्मावती विवाह' तथा रत्नसेन अलाउद्दीन मैत्री के सन्दर्भ में आया है। इनमें से लोकजीवन की दृष्टि से दूसरे भोज का महत्त्व नगण्य है। यह भोज उच्चस्तर का भोज है जो दो राजाओं के मध्य मान-सम्मान का भोज है। इसे हम व्यक्तिगत स्तर पर दिया गया भोज कह सकते हैं। किसी सामाजिक परम्परागत भोज के अन्तर्गत इसको स्थान नहीं दिया जा सकता है।

रत्नसेन और पद्मावती के विवाह के अवसर पर दिया गया भोज ही लोकसम्मत भोज है। इसी को बिरादरी का भोज भी कहा जाता है। सामान्यत: लोकजीवन में ऐसा भोज, पुत्र-जन्म, विवाह, धार्मिक अनुष्ठानों तथा मृत्यु आदि अनेक अवसरों पर दिया जाता है।

इन सब भोजों में विवाह के अवसर पर दिया गया भोज प्रमुख माना जाता है। पद्मावतकार ने भोज वर्णन परम्परा के अनुसार ही किया है। विवाह के अवसर पर पद्मावती के पिता गन्ध र्वसेन ने अनेक प्रकार के व्यंजन बनवाये.....

औ छप्पन परकार जो आए। नहिं देख, न कबहूँ खाए।।[9]

इन सभी व्यंजनों में 'भात' का महत्त्वपूर्ण स्थान है भला इस लौकिक भोज को जायसी कैसे भूल सकते थे.....

पहिले भात परोसे आना। जनहुँ सुबास कपूर बसाना।।[10]

जायसी में विवाह के भोजों के विधि-विधानों पर भी प्रकाश डाला है। हिन्दुओं के 'जेवनार' में जो लोग एक पंक्ति में बैठकर भात नहीं खा सकते, वे बिरादरी से बाहर समझे जाते हैं..... प्रस्तुत पंक्तियों में जायसी इसी प्रथा को स्पष्ट करते हुए जायसी लिखते हैं....

पाँति-पाँति सब बैठे, भाँति भाँति जेवनार।।[11]

लोकजीवन में वैवाहिक कृत्यों के विभिन्न अवसरों पर वर-पक्ष और कन्या पक्ष के बीच व्यंग्यपूर्ण हास-परिहास भी होता है। जायसी ने इसका एक संक्षिप्त चित्र पद्मावत में प्रस्तुत किया है। यह अवसर जेवनार प्रारम्भ होने के पहले आया है। लोकजीवन में भोज और भात के समय बाजा बन्द करवा दिया जाता है।....

जेवन आवा, बीन न बाज।।[12]

इसीलिए राजा रत्नसेन भोजन करना अस्वीकार कर देता है-

बिनु बाजन नहिं जेवै राजा।।[13]

कन्या-पक्ष के पंडितों के कारण पूछने पर उसने यह (नाद ही ज्ञान का वाहक होता है) कहते हुए चतुरतापूर्ण उत्तर दिया.....

तुम पंडित जानहु सब भेदू।
पाहिले नाद भएउ तब बेदू।।
सो तुम बराजे नीक का कान्हा।
जेंवन संग भोग विधि दीन्हा।।[14]

इस पर कन्यापक्ष वाले सन्तोषजनक उत्तर देते हुए कहते हैं....

राजा! उतर सुनहु अब सोई। महि डोलै जौ वेद न होई।।
नाद, वेद, मद, पैंड़ जो चारी। काया महँ ते, लेहु विचारि।।
जस मद पिए घूम कोई, नाद सुनै पै घूम।।
तेहितें बरजे नीक है, चढ़े रहसि कै दूम।।[15]

इस प्रकार विवाद आगे नहीं बढ़ा और भोज प्रारम्भ हो गया। यह भोज प्राचीन लोककृत्य पर प्रकाश डालता है। इसके साथ ही आधुनिक लोकजीवन के भोजों की परम्परा का ज्ञान भी कराता है।

पर्वोत्सव एवं ऋतु उत्सव लोकजीवन के अभिन्न अंग हैं। जायसी ने बसन्त, होली और दीवाली आदि उत्सवों का व्यापक रूप से वर्णन किया है लेकिन कवि ने इन उत्सवों एवं पर्वों के लोक-प्रचलित स्वरूप को ही ग्रहण किया है। जायसी ने 'बसन्त पंचमी' नामक पर्व का विस्तार से वर्णन किया है। इस पर्व का उल्लेख दो स्थानों पर किया गया है। पहला उल्लेख 'सिंहलद्वीप खंड' में हीरामन सुआ, रत्नसेन को पदमावती से मिलने की युक्ति बताते हुए 'श्री पंचमी' की चर्चा करता है....

ISSN No. : 2347–9612

माघ मास, पाछिल पछ लागे। सिरी पंचमी होइहि आगे।।
उधरिहि महादेव कर बारू। पूजहि जाइ सकल संसारू।।
पद्मावती पुलि पूजै आवा। होइहि ऐहि मिस दीठि मेरावा।।[6]

श्री पंचमी का दूसरा उल्लेख 'बसुत खण्ड' के अन्तर्गत आता है। जब पद्मावती अपनी सहेलियों सहित महादेव पूजा के लिए देव मन्दिर जाती है.....

दैउ दैउ कै सो ऋतु गँवाई। सिरी पंचमी पहुँची आई।।
भएउ हुलास नवल ऋतु माहाँ। खिन न सोहाइ धूप औ छाहाँ।।
आजु बसंत नवल ऋतु राजा। पंचमी होइ, जगत सब साजा।।[7]

होली की चर्चा बसन्त पंचमी के प्रसंग में की गई है। प्राय: गांवों में होली का हुड़दंग बसन्त पंचमी के दिन से ही प्रारम्भ हो जाता है। इसी प्रसंग में चाँचरी नामक लोकनृत्य का उल्लेख भी हुआ है....

फागु करहिं सब चाँचरि जोरी।
मोहि तन लाइ दीन्ह जस होरी।।[8]

होली में प्राय: अबीर, गुलाल रंगों का प्रयोग किया जाता है। लेकिन इनके स्थान पर जायसी ने सिन्दूर शब्द का प्रयोग किया है।

लोकजीवन का महत्वपूर्ण तत्त्व लोकप्रथाएँ हैं।

यह प्रथाएँ ही किसी लोक की पहचान कराती हैं। 'पद्मावत' में गौना प्रथा, सती प्रथा, जायसी प्रथा और चौपड़ खेलने की लोक प्रथाओं की विशेष चर्चा की गई है।

'पद्मावत' में गौने की प्रथा का दो स्थलों पर वर्णन हुआ है। पद्मावती के प्रसंग में उसकी वेदना का मार्मिक उद्घाटन हुआ है। कन्या की बिदाई एक मार्मिक घटना होती है। इस समय सभी लोग भाव विहल हो उठते हैं। लोकजीवन के पारखी जायसी की दृष्टि से यह प्रसंग कैसे ओझल होता। गौने का समाचार सुनते ही पद्मावती का हृदय काँप उठता है और आँखों में आँसू भर आए। वह अपनी सखियों से कहती है.....

मिलहु, सखी। हम तहवाँ जाहीं, जहाँ जाइ पुनि आउब नाहीं।।
पुनि हम मिलहिं कि न मिलहिं, लेहु सहेली भेंटि।।[9]
गौने का दूसरा सन्दर्भ बादल के गौने में मिलता है।

लोकजीवन में राजपूत जीवन से सम्बन्धित जौहर प्रथा का बड़ा महत्त्व है। इस प्रथा से मध्ययुगीन वीरता और दर्प का पूरा-पूरा परिचय मिलता है। राजपूत नारियों की शौर्यगाथा भी इसी प्रथा में निहित है। इसको राजपूत नारियों की शौर्यगाथा भी इसी प्रथा में निहित है। इसको राजपूत नारियों ने अपनी सतीत्व की रक्षा के लिए साधन-रूप में अपनाया है। 'पद्मावत' में जौहर का प्रसंग दो स्थलों पर आया है। पहला, अलाउद्दीन और रत्नसेन के युद्ध प्रसंग में जो सन्धि हो जाने के कारण कार्यन्वित न हो सका। दूसरा, रत्नसेन की मृत्यु के बाद अलाउद्दीन के चित्तौड़गढ़ पर आक्रमण करने पर सम्पन्न हुआ। इस सन्दर्भ में उद्धरण द्रष्टव्य है.....

जौहर भई सब इस्तरी, पुरूष भए संग्राम।
बादशाह गढ़ चूरा, चितउर भा इसलाम।।[20]

'पद्मावत' में सती प्रथा का उल्लेख भी मिलता है। 'रत्नसेन' की मृत्यु के पश्चात उसकी दोनों रानियाँ पद्मावत और नागमती सती हो सती हैं।

सामान्य जनजीवन में शकुन-अपशगुन, टोना-टोटका, तंत्र मंत्र, मंगल अमगंल और भूत-पिशाच सम्बन्धी अन्धविश्वासों को बहुत महत्त्व दिया जाता है। शिक्षित और सभ्य समाज की अपेक्षा लोकसमाज में इनका प्रभाव अधिक रहता है। जायसी ने इन लोकविश्वासों को पद्मावत में स्थान-स्थान पर दिखाया है। इससे सम्बन्धित एक उदाहरण इस प्रकार है.....

परिवा नोमी पुराब न भाएँ। दूइज दसमी उतर अदाएँ।।
पाँचइँ तेरसि दखिए रमेसरी। छठि चौदसि पच्छिउँ परमेसरी।।[21]

उक्त पंक्तियों में बताया गया है कि परिवा और नौमी को पूर्व दिशा की यात्रा न करना चाहिए। दूइज और दशमी को उत्तर की ओर अशुभ है। पंचमी और तेरस को दक्षिण दिशा लक्ष्मी है और छट्ठ एवं चतुदर्शी को पश्चिम दिशा की ओर जाना परम शुभ है।

जादू-टोना ओर अलौकिक घटनाओं पर विश्वास करना, लोक विश्वास क प्रमुख अंग है। 'पद्मावत' के 'देवपाल दूती खंड' में जादू-टोने का उल्लेख मिलता है।

हिन्दू समाज में संयुक्त परिवार का विशेष महत्त्व रहा है। जायसी ने भारतीय संयुक्त परिवार की सुन्दर झांकी प्रस्तुत की है। पारिवारिक सम्बन्धों का परिचय हमें लोकजीवन में ही मिल सकता है। 'पदमावत' में पति-पत्नी, माता-पिता, माता-पुत्र-पुत्री, पिता-पुत्री, ससुर-दामाद, सास-बहु एवं नन्द-भाभी के सम्बन्धों का मार्मिक चित्रण हुआ है। 'पद्मावत' में तद्युगीन नारी की स्थिति को भी चित्रण किया गया है। 'नागमती सुआ खंड' में नारी की सामाजिक स्थिति का संकेत मिलता है। इसमें पति की आज्ञा न मानने वाली नारी को अविश्वसनीय कहा गया है। ऐसी नारी को सम्मान के योग्य बताया गया है जो पति की आज्ञा का अनुसरण करती है....

इस सन्दर्भ में एक उदाहरण द्रष्टव्य है....

जो तिरिया के काज न जाना। परै धोख, पाछे पछिताना।।
जो न कंत के आयसु माहीं। कौन भरोस नारि कै वाही।।[22]

इसके अतिरिक्त जायसी विभिन्न व्यवसायों एवं विभिन्न लोककलाओं (संगीत, वाद्य, नृत्य, स्थापत्य, मूर्ति एवं वास्तुकला) का भी उल्लेख किया है।

इस प्रकार जायसी ने 'पद्मावत' में लोकजीवन के अनेक लोक-कृत्यों, लोक-पर्वोत्सवों एवं लोक प्रथाओं, विश्वासों की सुन्दर झांकी प्रस्तुत की है।

सन्दर्भ

1. गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जात कर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्रासन, चूड़ाकर्म, कर्णवेध, उपनयन (यज्ञोपवीत), विदयारम्भ, समावर्तन, विवाह, वानप्रस्थ, सन्यास, अंत्येष्टि। (दामोदर दास

ISSN No. : 2347–9612

वसिष्ठ : कविवर नज़ीर अकबराबादी, हिन्दी-काव्य का आलोचनात्मक अध्ययन : पृ. 43)

2. आचार्य रामचंद्र शुक्ल : जायसी ग्रंथावली : पृ. 17
3. वही : पृ. 17
4. (1) वही : पृ. 17
4. (2) वही : पृ. 20
5. वही : पृ. 119
6. वही : पृ. 122, 123
7. वही : पृ. 126
8. वही : पृ. 126
9. वही : पृ. 128
10. वही : पृ. 128
11. वही : पृ. 128
12. वही : पृ. 128
13. वही : पृ. 128
14. वही : पृ. 125
15. वही : पृ. 125
16. वही : पृ. 69
17. वही : पृ. 70
18. वही : पृ. 155
19. वही : पृ. 167
20. वही : पृ. 300
21. वही : पृ. 168
22. वही : पृ. 35

❖❖